पुरुषायुषजीविन्यो निरातंका निरीतयः।

यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्ब्रह्मवर्चसम् ।।63।।

अन्वय मदीयाः प्रजाः यान् पुरुषायुषजीविन्यः निरातटा निरीतयः, तस्य त्वद् ब्रह्मवर्चस हेतुः।

अनुवाद मेरी प्रजाएँ जो मनुष्य की पूर्ण आयु तक जीने वाली होती हैं, निर्भय रहती हैं एवं अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि उपद्रवों से बची रहती हैं, इन सबका कारण आपका ब्रह्मतेज ही है।

टिप्पणियाँ

मदीयाः अस्मद् छ

पुरुषायुष पुरुषस्य आयुः पुरुषायुषं (पुरुषायुस् अच्), पुरुषायुषं जीवन्ति इति पुरुषायुषजीविन्यः, पुरुषायुष जीवणिनि। प्रजा का विशेषण। वह प्रजा जो पुरुष को पूरी अर्थात् सौ साल तक जीती है। पुरुष की आयु सौ साल तक मानी गई है, **''शतायुर्वै पुरुषः।''** दिलीप के राज्य में लोग अपनी पूर्णायु भोगकर मरते हैं, किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती है।

निरीतयः निर्गताः ईतिभ्यः इति निरीतयः (प्रादि समास), आतंको से रहित। प्रजाः का विशेषण। छह प्रकार की ईतियां (आतंक) मानी गई हैं: (1) अतिवृष्टि (अत्यधिक वर्षा जिससे बाढ़ आकर खेत बह जाएँ), (2) अनावृष्टि (वर्षा का अभाव, सूखा), (3) मूषिका (चूहों से डर), (4) शलभाः (टिड्डियों से खेती का नाश), (5) शुकाः (तोते

आदि पक्षियों से अन्न तथा फलों की हानि) (6) प्रत्यासन्नाश्च राजानः (हमला करने को तैयार पड़ोसी सीमावर्ती राजा) ये छः ईतियों मानी गई हैं। देखिए नीतिज्ञ कामन्दक आचार्य के वचन–

''अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषिकाः शलभाः शुकाः।

प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः।।

ब्रह्मवर्चस् ब्रह्मणः वर्चः ब्रह्मवर्चसम्, ब्रह्मतेज।

प्रस्तुत श्लोक में उपर्युक्त 60 वें श्लोक के विचार को ही विशद रूप में प्रकट किया है। ऋषि वशिष्ठ के मन्त्रों के बल से न केवल दिलीप राजा शत्रुओं से निश्चिन्त हैं अपितु अन्य आपदाओं जैसे अतिवृष्टि आदि से उनका राज्य सुरक्षित है।